4वीं द्विवार्षिक अंतर्राष्ट्रीय आईएससीएसजीसीओएन 2021

13 एवं 14 फरवरी 2021

रिजनरेटिव मेडिसिन पर सतत चिकित्सा शिक्षा कार्यशाला

द इंडियन स्टेम सेल ग्रुप एसोसिएशन एवं एम्स,रायपुर ने नेशनल एकेडमी ऑफ मेडिकल साइंसेज (एनएएमएस), सीजी काउंसिल ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, इंडियन ऑर्थोपेडिक एसोसिएशन(आईओए), इंडियन मेडिकल एसोसिएशन(आईएमए, रायपुर), द फेडरेशन ऑफ ऑब्सटेट्रिक्स एंड गायनेकॉलोजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया (एफओजीएसआई–सीजी), रायपुर एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स (आरएपी), सेंट्रल जोन ऑफ इंडियन ऑर्थोपेडिक एसोसिएशन(सीईजीआईओए), छत्तीसगढ़ इंडियन ऑर्थोपेडिक एसोसिएशन (सीजीआईओए) एवं अस्थिरोग विभाग, एम्स,रायपुर के तत्वावधान में इस सम्मेलन को आयोजित किया। रीजेनेरेटिव चिकित्सा का संप्रयोग एक ऐसे भविष्य की उम्मीद देती है जो कि विभिन्न चिकित्सकीय बीमारियों से मुक्त हो। इस प्रकार के सूचनात्मक सम्मेलनों को आयोजित करने का उद्देश्य चिकित्सकीय वर्ग में जागरूकता फैलाना है। इस सम्मेलन ने स्टेम सेल्स एवं इससे संबंधित उत्पाद और उसके विभिन्न चिकित्सकीय एवं शल्य–क्रियाओं में विविध तकनीक को प्रदर्शित किया। इस सम्मेलन का आयोजन एम्स, रायपुर एवं आईएससीएसजी द्वारा एम्स, परिसर के भव्य सभागृह में 13 एवं 14 फरवरी को हुआ।

इस सम्मेलन में विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संकाय सदस्यों ने भाग लिया। प्रस्तावित संकाय सदस्य निम्नानुसार थे–

प्रो. डॉ. नितिन एम नागरकर	निदेशक एवं सीईओ, एम्स रायपुर
प्रो. डॉ. एस.पी. धनेरिया	अधिष्ठाता एम्स रायपुर
प्रो. डॉ. शान्ताराम शेट्टी	प्रति कुलपति एनआईटीटीई विश्वविद्यालय
डॉ. पी.के. अग्रवाल	कुलपति ओयूएटी भुवनेश्वर
प्रो. डॉ. डी.के. तनेजा	इंदौर
प्रो. डॉ. सुजाता मोहंती	एम्स नई दिल्ली
डॉ. शिल्पा शर्मा	एम्स नई दिल्ली
डॉ. संजय वाधवा	एम्स नई दिल्ली
डॉ. अमित डिंडा	एम्स नई दिल्ली
डॉ. दीपा भरतीया	मुंबई
प्रो. डॉ. आलोक सी अग्रवाल	एम्स रायपुर
प्रो. डॉ. मनीष खन्ना	लखनऊ
डॉ. कंचन मिश्रा	सूरत
डॉ. प्रदीप महाजन	मुंबई
डॉ. आर.के.शर्मा	कोल्हापुर
डॉ. मेघनाद जोशी	कोल्हापुर
डॉ. प्रभु मिश्रा	नई दिल्ली
डॉ. एस महापात्रा	बुरला
डॉ. अनंत बगुल	पुणे
प्रो.डॉ. कंजक्षा घोष	मुंबई
डॉ. मार्को ट्रॉब	स्विट्जरलैंड

डॉ. मियोमिर नेजेविक	रूस
डॉ. गीता जोतवानी	नई दिल्ली
प्रो.डॉ. सोमेन मिश्रा	एम्स रायपुर
डॉ. विराट गल्होत्रा	एम्स रायपुर
प्रो.डॉ. संदीप श्रीवास्तव	वर्धा
डॉ. वी आर रवि	त्रिची
डॉ. एस के मुखर्जी	रायपुर
डॉ. आशा जैन	रायपुर
डॉ. सत्येंद्र फुलझेले	रायपुर
डॉ. डी के मजुमदार	कोलकाता
डॉ. संकल्प शर्मा	एम्स रायपुर
डॉ. मधन जेरमन	नई दिल्ली
डॉ. हर्षल सकले	एम्स रायपुर
डॉ. वंदिता सिंह	एम्स रायपुर
डॉ. संतोष राव	एम्स रायपुर
डॉ. मीनल वासनिक	एम्स रायपुर
डॉ. रमेश चंद्राकर	एम्स रायपुर
डॉ. रूपा मेहता	एम्स रायपुर
डॉ. एकता खंडेलवाल	एम्स रायपुर
डॉ. प्रमोद अवति	चंडीगढ़
डॉ. सप्तोर्षि मंडल	जोधपुर
डॉ. शिंपा शर्मा	कोल्हापुर

इंडियन स्टेम सेल ग्रुप एसोसिएशन

4वीं द्विवार्षिक अंतर्राष्ट्रीय आईएससीएसजीसीओएन 2021

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, रायपुर (छ.ग.)

द्वारा आयोजित

स्थानः सभागृह, गेट सं–5, एम्स रायपुर (छ.ग.)

तिथिः 13 एवं 14 फरवरी, 2021

विज्ञान संबंधी कार्यक्रम

दिन–1 (13.02.2021)

सीएमई

समय	शीर्षक	प्रवक्ता
08:00 – 09:00 पूर्वाह्न	पंजीकरण एवं ब्रेकफास्ट	
सत्र 1: अध्यक्षः प्रो. डॉ. आलोक सी अग्रवाल, प्रो. डॉ. विनय पंडित, प्रो. डॉ. अमित चौहान		
09.00 – 9.15 पूर्वाह्न	रीजेनेरेटिव मेडिसिन एपलिकेशन्स ऑफ एमएससी एंड चैलेंजेज इन क्लीनिकल डेवेलपमेंट	डॉ.कंचन मिश्रा, सहायक निदेशक (अनुसंधान), सूरत रक्तदान केंद्र एवं अनुसंधान केंद्र सूरत
09.15 – 9.45 पूर्वाह्न	बीएमएसी इन एवीएन एंड ननयूनियन ऑफ लॉन्ग बोन्स	प्रो. डॉ. शांताराम शेट्टी, प्रति कुलपति एनआईटीटीई विश्वविद्यालय, मैंगलोर
09.45 – 10.00 पूर्वाह्न	ब्लड प्रोडक्ट्स एवं रीजेनेरेटिव मेडिसिन	डॉ. शिल्पा शर्मा, अतिरिक्त प्राध्यापक, पीडियाट्रिक सर्जरी विभाग, एम्स नई दिल्ली
10.00 – 10.15 पूर्वाह्न	टिश्यू इंजीनियरिंग इन मैंडीबुलर रीकंस्ट्रक्शन	डॉ. संतोष राव, सह–प्राध्यापक,दंत–चिकित्सा, एम्स रायपुर
10.15 – 10.30 पूर्वाह्न	स्टेम सेल्स इन डेंटिस्ट्री	प्रो. डॉ. विराट गलहोत्रा, विभागाध्यक्ष दंत–चिकित्सा, एम्स रायपुर
10.30 – 10.45 पूर्वाह्न	ओवरव्यू ऑफ प्लेटलेट रिच प्लाज्मा	डॉ. संकल्प शर्मा, सह– प्राध्यापक, ट्रांसफ्यूजन चिकित्सा, एम्स रायपुर, छ.ग.

10.45 – 11.00 पूर्वाह्न : चाय–अवकाश		
सत्र 2: अध्यक्ष : प्रो. डॉ. रामांजन सिन्हा, प्रो. डॉ. एलि मोहापात्रा, प्रो. डॉ. एन के अग्रवाल		
11.00 – 11.15 पूर्वाह्न	रोल ऑफ स्टेम सेल्स इन स्पाईनल कॉर्ड इंजुरी	डॉ. अनंत बगुल, निदेशक चैतन्य स्टेम सेल सेंटर, पुणे
11.15 – 11.30 पूर्वाह्न	क्लीनिकल एक्सपीरियंस ऑफ पीआरपी–प्लेटलेट्स एंड प्लाज्मा	डॉ. मधान जेयारमण, वरिष्ठ रेजीडेन्ट, शारदा विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा
11.30 – 11.45 पूर्वाह्न	विडियो ऑन– डिमोंसट्रेशन ऑफ ऑटोलोगस प्लेटलेट रिच प्लाज्मा प्रीपेरेशन इन ब्लड बैंक	डॉ. संकल्प शर्मा, सह– प्राध्यापक, ट्रांसफ्यूजन चिकित्सा, एम्स रायपुर, छ.ग. डॉ. रमेश चंद्राकर, सह– प्राध्यापक, ट्रांसफ्यूजन चिकित्सा, एम्स रायपुर, छ.ग.
11.45 – 12.00 पूर्वाह्न	डिमोंसट्रेशन ऑफ प्लेटलेट रिच फिबरिन	डॉ. मीनल वासनिक, सहायक प्राध्यापक ट्रांसफ्यूजन चिकित्सा, एम्स रायपुर, छ.ग.
12.00 – 12.15 अपराह्न	डिमोंसट्रेशन ऑफ वैरियस पोर्टल्स ऑफ इंजेक्शन एंड इंजेक्शन ऑफ पीआरपी	डॉ. हर्षल सकले, सह–प्राध्यापक, अस्थि–रोग विभाग, एम्स रायपुर छ.ग.
12.15 – 12.30 अपराह्न	डिमोंसट्रेशन ऑफ बोन मैरो एसपिरेशन फ्रॉम इलियक क्रेस्ट (वीडियो)	प्रो.डॉ. मनीष खन्ना, अध्यक्ष आईएससीएसजी / डॉ. सतीश मुथु, परामर्शदाता, ऑर्थोपेडिक सर्जन
12.30 – 12.45 अपराह्न	रोल ऑफ पीआरपी इन ऑस्टीयोअर्थराइटिस	डॉ. अजीत सैगल, वरिष्ठ परामर्शदाता, ऑर्थोपेडिक सर्जन, वाराणसी
12.45 – 01.00 अपराह्न	रीजेनेरेटिव मेडिसिन इन ओटोराइनोलैरिंगोलॉजीः करेंट स्टेटस एवं फ्यूचर ट्रेंड्स	डॉ. रूपा मेहता, सह–प्राध्यापक, ईएनटी, एम्स रायपुर
01.00 – 2.00 अपराह्न : भोजनावकाश		
2.00 – 2.30 अपराह्न : उद्घाटन – प्रो. डॉ. सरोज चूड़ामणि गोपाल – अध्यक्ष, नेशनल एकेडमी ऑफ मेडिकल साइंसेज, इंडिया मुख्य अतिथिः डॉ. बी शिवशंकर – अध्यक्ष, इंडियन ऑर्थोपेडिक एसोसिएशन इस समारोह की अध्यक्षता प्रो.(डॉ.) नितिन म. नागरकर द्वारा की जाएगी– निदेशक एवं सीईओ, एम्स रायपुर		
सत्र:3 अतिथि व्याख्यानः 2.00–3.30 अपराह्न		
अध्यक्षः प्रो.डॉ. डी.के. तनेजा एफएएमएस, डॉ.राकेश गुप्ता		
02.30 – 02.45 अपराह्न	रोल ऑफ रीजेनेरेटिव मेडिसिन इन मेडिकल फील्ड	प्रो.(डॉ.) नितिन एम. नागरकर, निदेशक एवं सीईओ, एम्स रायपुर एवं विभागाध्यक्ष, ईएनटी
02.45 – 03.00 अपराह्न	इंट्रोडक्शन टू आईएससीएसजी एंड रीजेनेरेटिव साइंस. इंपॉर्टेंस ऑफ ऑर्थोबायोलॉजिक्स इन मॉर्डन मेडिसिन	प्रो.डॉ. मनीष खन्ना, चेयरमैन एवं अध्यक्ष, इंडियन स्टेम सेल स्टडी ग्रुप एसोसिएशन एवं मुख्य परामर्शदाता, एपले ऑर्थोपेडिक

		सेंटर, लखनऊ, उ.प्र.
03.00 – 03.15 अपराह्न	रोल ऑफ स्टेम सेल्स इन ऑब्स एंड गाइन प्रैक्टिस	डॉ. आशा जैन, परामर्शदाता प्रसूति एवं स्त्रीरोग चिकित्सक, अध्यक्ष एफओजीएसआई, रायपुर
03.15 – 03.30 अपराह्न	रोल ऑफ स्टेम सेल्स इन ऑर्थोपेडिक्स	प्रो. डॉ. आलोक चंद्र अग्रवाल एफएएमएस, विभागाध्यक्ष, अस्थिरोग विभाग, एम्स रायपुर
03.30 – 03.45 अपराह्न	वाई स्टेम सेल्स हैव नॉट डिलीवर्ड बाई नाउ?	डॉ. दीपा भरतीया, विभागाध्यक्ष, स्टेम सेल जीवविज्ञान विभाग, नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर रीसर्च इन रीप्रोडक्टिव हेल्थ(आईसीएमआर) मुंबई
03.45 – 04.00 अपराह्न	न्यूअर रेगुलेशनंस फॉर ड्रग रीसर्च, ट्रेल एवं रिलीज	प्रो. डॉ. एस.पी. धनेरिया, अधिष्ठाता (शैक्षणिक) एवं विभागाध्यक्ष, फॉर्माकोलॉजी, एम्स, रायपुर
सत्र 4: ऑपरचुनिटीज विद रीजेनेरेटिव थेरेपी 04.00–05.00 अपराह्न		
अध्यक्षः प्रो. डॉ. अनुदिता भार्गव, डॉ. अविनाश इंगले, डॉ. हर्षल सकले		
04.00 – 04.20 अपराह्न	स्टेम सेल्स एंड रीजेनेरेटिव मेडिसिन फ्यूचर पर्सपेक्टिव्स	प्रो.सुजाता मोहंती स्टेम सेल्स विभागाध्यक्ष, एम्स नई दिल्ली
04.20 – 04.35 अपराह्न	इन कंप्लेक्स वुंड हीलिंग	प्रो. संदीप श्रीवास्तव पूर्व अधिष्ठाता डीएमआईएमएस, सवांगी
04.35 – 04.50 अपराह्न	इन इनसाइजीनल हर्निया	प्रो. डॉ. श्रीवत्स कुमार महापात्रा, शल्य–क्रिया प्राध्यापक विआईएमएसएआर, बुरला
04.50 – 05.05 अपराह्न	इन न्यूरोलॉजिकल डेफिसीट लोवर लिंब	डॉ. शिल्पा शर्मा, अतिरिक्त प्राध्यापक, पीडिएट्रिक शल्य–क्रिया विभाग, एम्स नई दिल्ली
सत्र 5 : मच नीडेड अपकमिंग टेक्नोलॉजीज़ 05.20 – 06.00 अपराह्न		
अध्यक्षः डॉ. के डी तिवारी, डॉ. के एम कांबले		
05.05 – 05.20 अपराह्न	3डी प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी फॉर बोन एंड कार्टिलेज	डॉ. मेघनाद जोशी, सह–प्राध्यापक, स्टेम सेल्स विभाग एवं रीजेनेरेटिव चिकित्सा , डी वाई पाटिल मेडिकल कॉलेज, कोल्हापुर
05.20 – 05.35 अपराह्न	पीडिएट्रिक स्टेम सेल ट्रांसप्लांट	डॉ. सुनील जोनधाले, सह–प्राध्यापक, पीडिएट्रिक्स, एम्स रायपुर
5.35 – 06.00	विचार–विमर्श	

संकाय सदस्यों के लिए होटल एमब्रोशिया में अपराह्न 07.00 से 10.00 बजे तक रात्रि भोजन प्रस्तावित है।

विज्ञान संबंधी कार्यक्रम

दिन–2 (14.02.2021)

थीमः इंपॉवरिंग द ग्रे एरियाज ऑफ मेडिकल ट्रिटमेंट

आईएससीएसजी ओरेशन 09.00–09.30 पूर्वाह्न लैंडस्केप ऑफ रीसर्च एंड क्लीनिकल एपलिकेशन ऑफ स्टेम सेल थेरेपी इन इंडिया– प्रो. डॉ. कंजाक्षा घोष		
09.30–10.00 पूर्वाह्न स्व.डॉ.शंकरा नारायण ओरेशन– प्रो. डॉ. श्रीवत्स कुमार महापात्रा ऑवर एक्सपीरियंस विद सेल थेरेपी एट वीआईएमएसएआर बुरला		
सत्र 6: (10.00–11.30 पूर्वाह्न)		
अध्यक्षः डॉ. मीनाक्षी सिन्हा, डॉ. शमेंद्र साहू, डॉ. मोमिता दे		
10.00–10.10 पूर्वाह्न	एन अपडेट ऑन स्टेम सेल थेरेपी ऑन न्यूरोलॉजिकल डिजीजेज़	डॉ. मार्को ट्रॉब, ट्रांस यूरोपियन स्टेम सेल थेरेपी कनसॉर्टियम, स्वीट्जरलैंड
10.10–11.20 पूर्वाह्न	रोल ऑफ स्टेम सेल्स इन ऑप्थालमोलोजी	प्रो.डॉ. सोमेन मिश्रा, विभागाध्यक्ष, नेत्ररोग विभाग, एम्स रायपुर
10.20–10.30 पूर्वाह्न	एप्लीकेशन ऑफ नैनोटेक्नोलॉजी इन रीजेनेरेटिव मेडिसिन	प्रो.डॉ.अमित डिंडा, इमेरीटस वैज्ञानिक आईसीएमआर, विभागाध्यक्ष नई दिल्ली
10.40–10.50 पूर्वाह्न	एंजियोजेनेसिस एंड वैस्कुलर रीमॉडलिंग इन इंफ्लेमेटरी अर्थराइटिस	डॉ. सप्तऋषि मंडल,सह–प्राध्यापक, ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन, एम्स जोधपुर
11.00–11.10 पूर्वाह्न	रोल ऑफ स्टेम सेल्स इन बायोलॉजिकल साइंसेज	डॉ. पवन अग्रवाल, कुलपति, ओयूएटी, भुवनेश्वर, ओडिशा
11.10–11.20 पूर्वाह्न	पीआरपी फॉर मैनेजमेंट ऑफ नॉन हीलिंग अल्सर्स	प्रो. डॉ.सत्येंद्र फुलझेले, विभागाध्यक्ष, अस्थिरोग विभाग, पं. जेएनएम मेडिकल कॉलेज, रायपुर
11.20–11.30 पूर्वाह्न	डूज़ एंड डोन्ट्स फॉर क्लीनिकल ट्रायल्स	प्रो. शिंपा शर्मा, डीवाई पाटिल मेडिकल कॉलेज, कोल्हापुर, महाराष्ट्र, इंडिया
सत्र –7 (11.30 पूर्वाह्न –01.00 अपराह्न)		
अध्यक्षः प्रो.डॉ. नितिन म. नागरकर, प्रो.डॉ. एस पी धनेरिया, डॉ. महेश सिंहा		
11.30–11.45 पूर्वाह्न	रोल ऑफ रीजेनेरेटिव साइंस इन सेरेब्रल	डॉ. प्रदीप महाजन, मुंबई
11.45–11.55 पूर्वाह्न	रीजेनेरेटिव इंडोडॉन्टिक्स	डॉ. सारिका गुप्ता
11.55–12.05 अपराह्न	स्टेम सेल्स इन न्यूरोपैथोलॉजी	डॉ. वंदिता, सहायक प्राध्यापक, पैथोलॉजी, एम्स रायपुर

12.05–12.15 अपराह्न	ऑर्थोबायोलॉजिक्सः एन आंसर टू द फ्यूचर ऑफ ऑर्थोपेडिक्स	डॉ. मुकुंद माधव ओझा, एम्स रायपुर
12.15–12.25 अपराह्न	स्टेम सेल ट्रांसप्लांट इन पोस्ट ट्रॉमेटिक स्पाईनल कॉर्ड इनजरीः ए रीव्यू इन 7 पैशेन्ट्स विद मिनिमम 3 इयर्स फॉलो–अप	डॉ. सुहाशीष राय, कोलकाता
12.25–12.35 अपराह्न	सिकल सेल डिजीजः रोल ऑफ हेमोपोइटिक स्टेम सेल ट्रांसप्लांटेशन	डॉ. एकता खंडेलवाल, सह–प्राध्यापक, फिजियोलॉजी, एम्स रायपुर
12.35–12.45 अपराह्न	स्टेम सेल इन रीहैबिलिटेशन मेडिसिन	प्रो.डॉ. संजय वाधवा एफएएमएस, विभागाध्यक्ष, पुनर्वास चिकित्सा, एम्स नई दिल्ली
12.45–01.05 अपराह्न	एमएससी डिराईव्ड एक्सोजोम्स इन ओए नी	डॉ. सतीश मुथु परामर्शदाता ऑर्थोपेडिक सर्जन
01.05–01.15 अपराह्न	जीन थेरेपी इन ओए नी	डॉ. मधान जेयारमण, संयुक्त सचिव, आईएससीएसजी, इंडिया
भोजनावकाश 01.15 – 02.00 अपराह्न		
सत्र–8 (02.00–03.00 अपराह्न)		
अध्यक्षः डॉ. जितेन कुमार मिश्रा, डॉ. नीता मिश्रा, डॉ. हेमंत चटर्जी		
02.20–02.30 अपराह्न	रोल ऑफ पीआरपी इन अनएक्सप्लेंड इनफर्टिलिटी	डॉ.नेहा गर्ग
02.30–02.50 अपराह्न	स्टेम सेल्सः इंडियन रेगुलेशंस एबाउट स्टेम सेल्स.रीसेंट अपडेटेड एंड ग्लोबल सीनारियो	डॉ. ए. बगुल
02.50–03.00 अपराह्न	लो कार्बोहाइड्रेट डाइट इन एंटी–एजींग	डॉ. कार्थिक राजा
आइएससीएसजी गोल्ड मेडल सेशन 03.00–4.00 अपराह्न		
अध्यक्षः डॉ.कंचन मिश्रा, प्रो. डॉ. आलोक चंद्र अग्रवाल, प्रो. डॉ. एस.फुलझेले		
03.00–03.10 अपराह्न	रोल ऑफ पीआरपी इन प्लांटर फैसाइटिस	डॉ. रंजीत चौधरी
03.10–03.20 अपराह्न	रोल ऑफ पीआरपी इन सैक्रोइलियैक ज्वांइट डिसफंक्शनल पेन	डॉ. समरजीत दे
03.20–3.30 अपराह्न	कंपेरेटिव स्टडी बिटवीन एलएस वर्सस पीआरपी इन टेनिस एल्बो	डॉ. शिल्प वर्मा
03.30–03.40 अपराह्न	कंपेरीजन ऑफ पीआरपी वर्सस सुप्रास्कैपुलर नर्व ब्लॉक इन पेरीअर्थराइटिस शोल्डर	डॉ. बुद्धदेब नायक
03.40–03.50 अपराह्न	स्टेम सेल ट्रांसप्लांट इन हेमेटोलॉजिकल डिसॉडर, एन एक्सपीरियंस फ्रॉम ए टर्शियरी केयर सेंटर	डॉ. अंकित सहाय
03.50–4.00 अपराह्न	पीआरपी इन लैटरल	डॉ. वी नागराजू

	इपीकॉन्डीलाइटिस	
विदाई समारोह		
हाई टी		

गतिविधि (दिन–1)

दिन की शुरूआत होते ही प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो.डॉ.आलोक चंद्र अग्रवाल, डॉ. विनय पंडित एवं प्रो.डॉ. अमित चौहान द्वारा की गई।

आईएससीजीसीओएन 2021 का प्रथम व्याख्यान डॉ. कंचन मिश्रा ने संबोधित किया जो कि रीजनल ब्लड ट्रांसफ्यूजन एवं रीसर्च सेंटर सूरत, गुजरात, भारत में सहायक निदेशक हैं। उन्होंने अपने व्याख्यान के दौरान स्टेम सेल्स, उनके इतिहास एवं विभिन्न चिकित्सकीय संकायों में उनकी रीजेनेरेटिव योग्यताओं की वर्तमान स्थिति के बारे में वर्णन किया। उन्होंने स्टेम सेल को ब्लैंक सेल के रूप में वर्णन किया जिसमें लगातार विभाजन करने एवं विभिन्न प्रकार की अन्य कोशिकाओं एवं ऊतकों में पृथक हो जाने की योग्यता होती है। उन्होंने इस तथ्य पर ज़ोर दिया कि स्टेम सेल्स मुख्यतः दो प्रकार की होती है– इम्ब्रायोनिक (प्ल्यूरिपोटेंट) स्टेम सेल्स जो कि शरीर के सभी प्रकार की कोशिकाओं के रूप में विकसित होने की योग्यता रखती है एवं दूसरा होता है मल्टीपोटेंट स्टेम सेल्स (वयस्क स्टेम कोशिका) जो कि कम परिवर्तनशील होती है एवं पृथक होने में कठिनाई होती है। उन्होंने संक्षिप्त रूप में मेसेनकाइमल स्टेम सेल्स की क्रियाओं के कार्यों एवं प्रक्रियाओं की चर्चा की। अपने वक्तव्यों के दौरान उन्होंने स्टेम सेल थेरेपी की साक्ष्य आधारित वर्तमान स्थिति के संदर्भ में आईसीएमआर नेशनल गाईडलाइंस के बारे में चर्चा की। अत्याधिक सूचनात्मक व्याख्यान देने के बाद अंत में उन्होंने यह कहकर अपना व्याख्यान समाप्त किया कि यद्यपि साक्ष्य आधारित स्टेम सेल्स एप्लीकेशन उतना प्रचलित नहीं है लेकिन अनुप्रयोग के समर्थन में पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध है।

द्वितीय व्याख्यान अप्रत्यक्ष रूप से जूम एप्लीकेशन के माध्यम से प्रो. डॉ. शांताराम शेट्टी के द्वारा दिया गया जो कि एनआईटीटीई मैंगलोर के प्रतिकुलपति है। उन्होंने बोन मैरो एसपीरेट कॉनसंट्रेट (बीएमएसी) के अनुप्रयोग के बारे में चर्चा की एवं संक्षिप्त रूप से नन यूनियन एवं इसके प्रकारों का वर्णन किया। उन्होंने बीएमएसी के संग्रह की कार्य–प्रणाली के बारे में चर्चा की। अपने व्याख्यान के माध्यम से उन्होंने बोन डिफेक्ट एवं नन यूनियन के प्रबंधन में बीएमएसी का प्रयोग करने वाले अन्य विभिन्न लेखों की चर्चा की। उन्होंने बीएमएसी के द्वारा स्वयं के सफलतापूर्वक पूर्ण हुए नन यूनियन के मामलों की चर्चा की एवं यह कहते हुए अपने व्याख्यान को समाप्त किया कि बीएमएसी स्टेम सेल थेरेपी लंबी हड्डियों के नन यूनियन के लिए एक सुरक्षित, सरल एवं विश्वसनीय विकल्प है एवं फीमर हेड केएवीएन के उपचार के दौरान बीएमएसी के साथ ऑगमेंटेशन ऑफ कोर डीकंप्रेशन प्रणाली एक उत्कृष्ट उपचार साधन प्रतीत होता है।

अगला व्याख्यान डॉ. संतोष राव, सह–प्राध्यापक, दंत–चिकित्सा विभाग, एम्स रायपुर द्वारा टिश्यू इंजीनियरिंग इन मैंडीबुलर रीकंस्ट्रक्शन पर दिया गया। उन्होंने एक महिला के मैंडीबुलर कैरसीनोमा से पीड़ित होने के रोचक मामले के बारे में चर्चा की जिसके ट्यूमर को हटाया गया और काटा गया और उसके बाद फ्री फैबुला और बीएमपी का प्रयोग कर उन्होंने मैंडिबल का पुनर्निमाण किया एवं इंप्लांट की

मदद से उसे मजबूत किया। अंत में उन्होंने यह कहकर अपने वक्तव्य को संपन्न किया कि दंत चिकित्सा में टिश्यू इंजीनियरिंग के अनुप्रयोग में अत्याधिक प्रबल संभावनाएँ है।

उसके बाद अगला व्याख्यान डॉ. विराट गलहोत्रा, विभागाध्यक्ष, दंत–चिकित्सा विभाग, एम्स रायपुर के द्वारा दिया गया। उन्होंने स्टेम सेल्स के मौखिक स्रोतों एवं रूट कैनाल वैस्कुलराइजेशन, डेंटल इंप्लांट्स, पेरियोडॉन्टल रीजेनेरेशन और बोन एवं क्रैनियोफेसियल रीजेनेरेशन में उनके अनुप्रयोग के बारे में चर्चा की। उन्होंने डेंटल स्टेम सेल्स बैंकिंग के बारे में भी चर्चा की।

उसके बाद प्लेटलेट रिच प्लाज्मा पर अत्यधिक सूचनात्मक व्याख्यान देने आए डॉ. संकल्प शर्मा, सह–प्राध्यापक, ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन, एम्स, रायपुर और डॉ. रमेश चंद्राकर के साथ मिलकर उन्होंने ऑटोलोगस पीआरपी के विनिर्माण पर एक विडियो भी प्रस्तुत किया। उन्होंने पीआरपी के विभिन्न वर्गीकरणों का वर्णन किया एवं क्रियात्मक परिणाम की सम्रग वृद्धि के लिए एक निश्चित स्थिति में वांछनीय पीआरपी के विनिर्माण में ट्रांसफ्यूजन चिकित्सा के अनुप्रयोग के बारे में बताया। अंततः उन्होंने अपना वक्तव्य यह कहते हुए संपन्न किया कि अभी एवं भविष्य में अन्य चिकित्सकीय संकायों में वांछनीय प्रभाव के लिए विभिन्न रक्त पदार्थो के अवतरण में ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन की अहम भूमिका होगी।

अगला व्याख्यान डॉ. अनंत बगुल ने द रोल ऑफ स्टेम सेल्स इन स्पाईनल कॉर्ड इंजरी पर जूम के माध्यम से प्रस्तुत किया। उन्होंने संक्षिप्त रूप से स्पाइनल कॉर्ड इंजरी, उसके चरणों, उसके जनसांख्यिकी रूपरेखा के बारे में बताया एवं उसके जटिलताओं के भार का भी वर्णन किया। उन्होंने मेसेनकाइमल कोशिकाओं के एंटी–इंफ्लेमेट्री, एंटी–एपॉपटोटिक और एंटी–ऑक्सीडेटिव गुणों का वर्णन किया। उन्होंने अपने कुछ मामलों की चर्चा की जो स्टेम सेल के अनुप्रयोग के बाद ठीक हुए थे। अंततः उन्होंने स्पाईनल कॉर्ड इंजरी में स्टेम सेल थेरेपी के जारी क्लीनिकल ट्रायल्स का संक्षेपण देते हुए अपना वक्तव्य समाप्त किया।

टी ब्रेक के लघु अंतराल के बाद सम्मेलन को डॉ. मधान जेयारमण, वरीष्ठ रेजीडेन्ट, शारदा विश्वविद्यालय के व्याख्यान के साथ आरंभ किया गया। उन्होंने अस्थिरोग के क्षेत्र में प्लेटलेट रीच प्लाज्मा के क्लीनिकल अनुप्रयोग के बारे में चर्चा की। उन्होंने विभिन्न वृद्धि कारकों के माध्यम से चोटिल ऊतकों के तीव्र गति से ठीक होने में पीआरपी के क्रिया की यंत्ररचना के बारे में संक्षिप्त रूप से वर्णन किया। उन्होंने टेंडीनोपैथीज, मसल इंजरीज, स्पाईनल इंजरीज, ऑस्टियो अर्थराइटिस एवं नन–यूनियन में पीआरपी के अनुप्रयोग के बारे में बताया। उन्होंने अपने व्याख्यान को पीआरपी के विभिन्न रूप एवं उनके डिफरेंशियल सेंट्रीफ्यूगेशन द्वारा विनिर्माण के बारे में बताते हुए समाप्त किया।

अगला व्याख्यान डॉ. मीनल वासनिक, सहायक प्राध्यापक, ट्रांसफ्यूजन चिकित्सा, एम्स रायपुर द्वारा प्रस्तुत किया गया। उन्होंने ऑटोलोगस पीआरपी के विनिर्माण एवं उसके महत्त्व के बारे में संक्षिप्त रूप में वर्णन किया। उन्होंने सेंट्रीफ्यूगेसन के दौरान पालन किए जाने वाले विभिन्न प्रोटोकॉल्स के बारे में बताया एवं रक्त से पीआरएफ के ठीक तरह से अलगाव हेतु इन प्रोटोकॉल्स की अत्यावश्यकता के बारे में भी ज़ोर दिया। उन्होंने यह कहते हुए अपने वक्तव्य को विराम दिया कि पीआरएफ को आगामी आरसीटी ट्रायल्स के माध्यम से मान्यता एवं मानकीकरण की आवश्यकता है।

अगला व्याख्यान डॉ. हर्षल साकले, सह–प्राध्यापक, अस्थिरोग विभाग, एम्स, रायपुर द्वारा अस्थिरोग के क्षेत्र में पीआरपी इंजेक्शन के लिए प्रयुक्त विभिन्न पोर्टल्स के ऊपर प्रस्तुत किया। अपने प्रस्तुतिकरण के शुरूआत में उन्होंने शरीर के विभिन्न जोड़ों के आसपास पट्टों एवं बंधनों की चोट के बोझ के बारे में संक्षिप्त में बताया। उन्होंने पूरी बारीकी से एक–एक जोड़ (कंधा, कुहनी, कलाई, कमर, घुटना एवं टखना) के बारे में बताया और अपने वर्णनात्मक स्लाइड्स के माध्यम से विशेष पैथोलॉजी को संबोधित करने वाले जोड़ के आसपास विभिन्न पोर्टल्स का भी वर्णन किया। उन्होंने शरीर के प्रत्येक जोड़ की प्रतिबिंब निर्देशित अभिगम की महत्ता पर ज़ोर दिया। अपने समापन टिप्पणी में उन्होंने विवेकपूर्ण रोगी चयन, रोगी सलाह, उत्कृष्ट तकनीक एवं फ्लूरोस्कॉपि के प्रयोग का महत्त्व और इस तरह की प्रकियाओं को करने के दौरान अल्ट्रासोनोग्राफी के महत्त्व के बारे में विवरण प्रस्तुत किया।

अगला व्याख्यान डॉ. सतीश मुथ्थु, शारदा विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तुत की गई। उन्होंने इलियक क्रेस्ट से बीएमएसी के संग्रह की विधि का वर्णन किया एवं विभिन्न ऑर्थोपेडिक परीस्थितियों में इसके प्रक्रमण एवं उपचारात्मक अनुप्रयोग का विवरण दिया। उनके व्याख्यान ने संक्षिप्त रूप से एसपिरेशन की तकनीक, सेंट्रीफ्यूगेशन एवं बीएमएसी बफी कोट स्ट्रेटम का महत्त्व जो कि बिना किसी इनफ्लेमेटरी कोशिकाओं के एमएससीज़ का अधिकतम सांद्रण उत्पन्न करता है, के बारे में सारांश प्रस्तुत किया।

अगला व्याख्यान डॉ. अजीत सैगल, वरिष्ठ परामर्शदाता, अस्थिरोग विभाग, वाराणसी ने जूम के माध्यम से प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने आस्टियो अर्थराइटिस में स्टेम सेल्स के उपचारात्मक एवं सुरक्षात्मक भूमिका के बारे में वर्णन किया।

अगला व्याख्यान डॉ. रूपा मेहता, सह–प्राध्यापक, ईएनटी विभाग, एम्स रायपुर ने ओटोराइनोलैरींगोलॉजी में रीजेनेरेटिव मेडिसिन की भूमिका पर इसके वर्तमान स्तर एवं भावी प्रचलन के बारे में बताते हुए विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने संक्षिप्त रूप से रीजेनेरेटिव मेडिसिन के सिद्धांतों के बारे में बताया। उन्होंने टिश्यू इंजिनियर्ड ऑरिक्यूलर कार्टिलेज फ्रेमवर्क की विशिष्टताओं के बारे में बताया। उसके बाद उन्होंने सेलुलर डर्मिस की मदद से सूचरलेस टिम्नोप्लास्टि के संदर्भ में एक लेख का उद्धरण प्रस्तुत किया। उन्होंने समापन करते हुए स्टेम सेल्स की अधिप्राप्ति के लिए बेहतर सुविधाओं की आवश्यकता एवं इएनटी के क्षेत्र में इसके कार्यान्वयन पर बल दिया।

विभिन्न चिकित्सकीय वर्गों के वरिष्ठ संकाय सदस्यों द्वारा विभिन्न सूचनात्मक व्याख्यानों के प्रस्तुतिकरण के बाद सत्र को प्रो. डॉ. आलोक चंद्र अग्रवाल द्वारा धन्यवाद ज्ञापन एवं वक्ताओं एवं अध्यक्षों को मोमेंटोज वितरण के साथ समाप्त किया गया।

भोजन हेतु एक घंटे के मध्यावकाश के बाद उद्घाटन समारोह शुरू हुआ और इसकी उद्घोषणा प्रो. डॉ. सरिता अग्रवाल, विभागाध्यक्ष, स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग, एम्स रायपुर द्वारा किया गया। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता निम्न गणमान्य अतिथियों के द्वारा की गई:–

1. प्रो.डॉ.सरोज चूड़ामणि गोपाल–अध्यक्ष, एनएएमएस, इंडिया(पद्म श्री)(जूम के माध्यम से)
2. डॉ. बी. शिवशंकर– अध्यक्ष आईओए
3. प्रो. डॉ. नितिन एम नागरकर– निदेशक एवं सीईओ, एम्स रायपुर
4. प्रो. डॉ. एस.पी.धनेरिया– अधिष्ठाता एम्स रायपुर
5. प्रो. डॉ. आलोक चंद्र अग्रवाल– अस्थिरोग विभागाध्यक्ष, एम्स रायपुर
6. प्रो. डॉ. मनीष खन्ना– अध्यक्ष, आईएससीएसजी
7. डॉ. कंचन मिश्रा– महासचिव, आईएससीएसजी
8. डॉ. विकास अग्रवाल– अध्यक्ष, आईएमए रायपुर
9. डॉ. के.डी तिवारी– अध्यक्ष, सेंट्रल जोन, आईओए
10. डॉ. हेमंत चटर्जी– अध्यक्ष सीजीआईओए
11. डॉ. आशा जैन– अध्यक्ष सीजीएफओजीएसआई

सम्मेलन का उद्घाटन प्रो. डॉ. नितिन म. नागरकर ने प्रत्यक्ष एवं डॉ. सरोज चूड़ामणि गोपाल ने आभासी रूप से किया। उसके बाद वरिष्ठ गणमान्य अतिथियों द्वारा दीप–प्रज्वलन किया गया एवं तदोपरांत सरस्वती वंदना एवं राष्ट्र–गान।

उद्घाटन समारोह की समाप्ति के बाद सत्र–3 की शुरूआत की गई जिसकी अध्यक्षता प्रो. डॉ. बी.के. तनेजा (आभासी रूप से),डॉ. हेमंत चटर्जी, डॉ. राकेश गुप्ता, एवं डॉ. हर्षल साकले ने की।

प्रथम व्याख्यान हमारे आदरणीय निदेशक एवं सीईओ, एम्स रायपुर, प्रो.डॉ. नितिन म. नागरकर ने चिकित्सा क्षेत्रों में रीजेनेरेटिव मेडिसिन की भूमिका पर दिया। अपने व्याख्यान में उन्होंने रीजेनेरेटिव मेडिसिन के क्षेत्र में स्टेम सेल्स के इतिहास से लेकर उनकी वर्तमान स्थिति का विस्तार से वर्णन किया। उन्होंने विभिन्न चिकित्सीय क्षेत्रों जैसे की अस्थिरोग शल्य–क्रिया, ईएनटी शल्य–क्रिया, आन्कोलॉजी इत्यादि में रीजेनेरेटिव मेडिसिन की संभावनाओं पर चर्चा की। उन्होंने इंड्यूस्ड प्ल्यूरीपोटेंट स्टेम सेल्स के उत्पादन के लिए वयस्क फाइब्रोब्लास्ट कोशिकाओं की रीप्रोग्रामिंग के बारे में चर्चा की। अपने व्याख्यान के दौरान उन्होंने स्टेम सेल्स की वर्तमान में जारी हरसंभव प्रयोग पर प्रकाश डाला। उन्होंने भारत में स्टेम सेल प्रोग्राम के पीछे विधि प्रावधानों की भी हमें संक्षिप्त जानकारी प्रदान की। अपने समापन टिप्पणी में उन्होंने रोगियों के लिए स्टेम सेल्स संबंधी उपचार उपलब्ध कराने के लिए बहु–विषयक दृष्टिकोण पर बल दिया।

अगला व्याख्यान प्रो. डॉ. मनीष खन्ना, चेयरमैन एवं अध्यक्ष, इंडियन स्टेम सेल स्टडी ग्रुप के द्वारा प्रस्तुत किया गया। उन्होंने इंडियन स्टेम सेल स्टडी ग्रुप के परिचय एवं रीजेनेरेटिव चिकित्सा के क्षेत्र में इसकी सहभागिता के बारे में चर्चा की। उन्होंने स्टेम सेल्स और रीजेनेरेटिव चिकित्सा के क्षेत्र में चल रहें ट्रायल्स के बारे में भी चर्चा की। अपने स्लाईड्स के माध्यम से वह श्रोताओं को यह स्पष्ट कराना चाहते थे कि भविष्य में स्टेम सेल्स एवं अन्य ऑर्थोबायोलॉजिक्स निश्चित रूप से रोगियों के त्वरित सुधार के लिए चिकित्सकों के साधनों में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अर्जित करेगा।

अगला व्याख्यान प्रो. डॉ. आलोक चंद्र अग्रवाल ने अस्थिरोग में स्टेम सेल्स की भूमिका पर दिया। अपने व्याख्यान में अपने लंबे अनुभव से स्टेम सेल्स, उनकी परिभाषा, सामर्थ्य, उनके स्रोत एवं उनके प्रकार के बारे में उन्होंने बारीकी से विस्तार में वर्णन किया। उन्होंने अस्थिरोग के क्षेत्र में जैसे की हड्डी एवं जोड़ों की चोट, उपास्थि दोष, टेंडिनोपैथीज, एवीएन ऑफ फीमर हेड, ऑस्टियोजेनेसिस इंपरफेक्टा, पीडिएट्रिक ऑर्थोपेडिक कंडिशन, ऑस्टियोपोरोसिस, इत्यादि में स्टेम सेल्स की वर्तमान भूमिका का वर्णन किया। उन्होंने संक्षिप्त रूप से इलियक क्रेस्ट से बीएमए की प्राप्ति की विधियों के बारे में बताया। अंतिम कुछ स्लाइड्स में उन्होंने मुख्यतः स्टेम सेल्स के उपयोग से परिवर्तनवादी परिणाम पाए जाने की क्षमता पर बल दिया और इसे पाने के लिए चिकित्सकों, जैववैज्ञानिकों, एवं जैवअभियंताओं के साथ सहयोगात्मक बहुविषयक दृष्टिकोण का होना अत्यावश्यक है।

अगला व्याख्यान डॉ. आशा जैन, परामर्शदाता, प्रसूति एवं स्त्री रोग विभाग, एफओजीएसआई अध्यक्ष, रायपुर द्वारा प्रस्तुत किया गया। अपना प्रस्तुति में उन्होंने स्टेम सेल्स और यूरोजेनाइटल ट्रेक्ट के पुनर्निमाण में स्टेम सेल्स की भूमिका के बारे में बताया। उन्होने पीएमओएफ एवं एंडोमिट्रीओसिस जैसी सामान्य स्त्रीरोग संबंधी समस्याओं में स्टेम सेल्स के प्रयोग के संबंध में भी बताया। उन्होंने ओवेरिअन और ब्रेस्ट कार्सिनोमाज की रिवर्सिंग में स्टेम सेल्स की क्षमता के बारे में भी बताया।

अगला व्याख्यान डॉ. दीपा भारतीय, विभागाध्यक्ष स्टेम सेल्स जीव विज्ञान विभाग, आईसीएमआर, मुंबई द्वारा प्रस्तुत किया गया। उन्होंने अपने व्याख्यान में 'वाई द स्टेम सेल्स आर नोट येट डिलिवरड' विषय पर चर्चा की। उन्होंने स्टेम सेल्स कार्यक्रम विकास में संलग्न विभिन्न नियंत्रक निकायों और इसकी वैधानिक पृष्ठभूमि के बारे में संक्षिप्त रूप से बताया। उन्होंने अपने व्याख्यान के समापन यह कहा कि आम जनता के लिए स्टेम सेल्स उपलब्ध कराने के लिए बहुत प्रयास की आवश्यकता है।

अगला सूचनाप्रद व्याख्यान प्रा. डॉ. सूर्य प्रकाश धनेरिया, डीएम क्लिनिकल फार्माकोलॉजी एवं अधिष्ठाता, एम्स रायपुर द्वारा प्रस्तुत किया गया। उन्होंने इस व्याख्यान में औषधि अनुसंधान, परीक्षण एवं प्रकाशन के लिए नवीन नियंत्रकों के बारे में चर्चा की। उन्होंने सुधार से लेकर मार्केटिंग निरीक्षण पश्चात् तक के औषधि निर्माण चरण की संक्षिप्त रूप से चर्चा की। उन्होंने चिकित्सकीय अनुसंधान में संलिप्त चिकित्सक के कर्तव्यों और चिकित्सक के नैतिक उत्तरदायित्वों पर जोर डाला। उन्होंने सूचित सहमति के महत्त्व के संबंध में भी समझाया।

अगला सत्र घाव भरने, इनसाइजनल हर्निया, अधः पाद के तंत्रिका संबंधी दोष एवं स्टेम सेल्स के आगामी परिप्रेक्ष्य के क्षेत्र में रीजेनेरेटिव थेरेपी के साथ अवसरों पर था। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. अनुदिता भार्गव एवं डॉ. शमेंद्र साहू और डॉ. अविनाश इंगले के द्वारा की गई।

इस सत्र में प्रथम व्याख्यान प्रो.डॉ. सुजाता मोहंती, विभागाध्यक्ष, स्टेम सेल विभाग, एम्स दिल्ली द्वारा जूम के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। उन्होंने स्टेम सेल्स, उनकी पुनर्योजी क्षमता एवं उनकी भविष्य में संभावनाओं के बारे में संक्षिप्त रूप से चर्चा की।

अगला व्याख्यान प्रो.डॉ. संदीप श्रीवास्तव, पूर्व अधिष्ठाता डीएमआईएमएस, सावंगी द्वारा जूम के माध्यम से दिया गया। उन्होंने पीआरपी की क्षमता एवं स्वयं के मामलों के अध्ययन द्वारा जटिल घाव भरने में इसके वर्तमान उपयोग का वर्णन किया। अगला व्याख्यान डॉ. शिल्पा शर्मा, अतिरिक्त प्राध्यापक, पीडिएट्रिक सर्जरी विभाग, एम्स नई दिल्ली ने अधः पाद के तंत्रिका संबंधी दोषों में स्टेम सेल्स के अनुप्रयोग पर प्रस्तुत किया। उन्होंने अधः पाद के चोटों में तंत्रिका संबंधी दोषों के प्रबंधन में स्टेम सेल्स की आशाजनक भूमिका के समर्थन में अनुसंधान लेख प्रस्तुत किए।

अगले व्याख्यान की अध्यक्षता डॉ. के.डी. तिवारी, डॉ. के.एम.कांबले ने की तथा अस्थि एवं उपास्थि और पीडिएट्रिक स्टेम सेल ट्रांसप्लांटेशन के लिए 3डी प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी की आवश्यकता पर बल दिया।

इस सत्र का प्रथम व्याख्यान डॉ. मेघानंद जोशी, सह–प्राध्यापक, स्टेम सेल एवं रीजेनेरेटिव चिकित्सा विभाग, डी.वाई. पाटिल चिकित्सा महाविद्यालय, कोल्हापुर ने अस्थि एवं उपास्थि की 3डी प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी पर जूम के माध्यम से प्रस्तुत किया। अपने व्याख्यान के दौरान उन्होंने 3डी प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी पर प्रकाश डाला जो कि स्कैफोल्ड के विनिर्माण में मददगार है और जिसपर वांछनीय ऊतकों के विकास के लिए स्टेम सेल्स का आरोपण किया जा सकता है।

इस सत्र और दिन का अंतिम व्याख्यान डॉ. सुनील जोंधाले, सह–प्राध्यापक, पीडिएट्रिक विभाग, एम्स रायपुर ने पीडिएट्रिक स्टेम ट्रांसप्लांटेशन पर प्रस्तुत किया। इसके द्वारा उन्होंने पूर्व में माने जाने वाले घातक कार्सिनोमा एवं इस प्रकार के अन्य रोगों के सुधार में पीडिएट्रिक स्टेम सेल ट्रांसप्लांटेशन के परिवर्तनवादी शुरूआत पर ज़ोर दिया। उन्होंने अधिक से अधिक बीमारियों को घटाने के लिए पीडिएट्रिक्स के क्षेत्र में रोगियों के चिकित्सकीय प्रबंधन में सुधार हेतु इस क्षेत्र के अत्याधिक विस्तार के बारे में वर्णन किया।

इस व्याख्यान के बाद सम्मेलन की समाप्ति प्रो. डॉ. आलोक चंद्र अग्रवाल द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ दी गई तथा होटल एमब्रोशिया में संकाय सदस्यों के लिए भव्य रात्रि भोजन आयोजित किया गया।

क्रियाकलाप(दूसरा दिन)

प्रथम दिन सफलतापूर्वक समाप्त होने के पश्चात् अगले दिन की शुरुआत आईएससीएसजी भाषण कार्यक्रम से हुई। प्रथम भाषण प्रो.(डॉ.) कंजाक्षा घोष द्वारा भारत में नलिका कोशिका चिकित्सा में अनुसंधान एवं क्लिनिकल प्रयोग की पृष्ठभूमि के विषय पर अप्रत्यक्ष रूप से दिया गया। द्वितीय भाषण प्रो.(डॉ.) एस. के. महापात्रा द्वारा स्वर्गीय डॉ. शंकर नारायण के विषय पर संचालित किया गया। इन्हो ंने वीआईएमएसएआर, बुर्ला में स्वर्गीय डॉ. शंकर नारायण के नलिका कोशिका चिकित्सा संबंधी अनुभव के बारे में भी चर्चा की।

द्वितीय दिवस की विषय–वस्तु चिकित्सकीय उपचार के दुर्गम क्षेत्रों को सशक्त करना था जिसमें चार विचारावेश सत्र सम्मिलित थे। प्रथम व्याख्यान स्विट्जरलैंड (जूम पर) के डॉ. मेक्रो ट्रॉब द्वारा तंत्रिका संबंधी रोग में नलिका कोशिका चिकित्सा पर अद्यतन एवं विवरण के विषय पर प्रस्तुत किया गया। इन्होंने पार्किंसन रोग और अलजाइमर रोग जैसे तंत्रिकाजनक रोगों में तंत्रिकाजन नलिका कोशिका के प्रयोग के महत्त्व पर जोर दिया।
यह सत्र वरिष्ठ संकाय सदस्य प्रो.(डॉ.) सोमेन मिश्रा के अनुवर्ती व्याख्यानों द्वारा जारी रहा। इन्होंने विभिन्न नेत्र संबंधी विकारों के उपचारों में लिंबल स्टेम सेल्स के महत्त्व पर और नेत्र संबंधी रोगों के उपचार में स्टेम सेल प्रयोग के भविष्य पर जोर दिया।

अगला व्याख्यान (डॉ.) सतेंद्र फूलझेले द्वारा गैर–उपचारात्मक अल्सरों के प्रबंधन में पीआरपी के उपयोग के विषय पर प्रदान किया गया। पीआरपी का जीर्ण अल्सरों हेतु एक सुरक्षित एवं प्रभावी विधि होने के परिणाम का समर्थन करने के लिए इन्होंने कई लेख उद्धृत किए। पीआरपी केवल अल्सर के उपचार में वृद्धि ही नहीं बल्कि गैर–उपचारात्मक अल्सरों द्वारा किए जाने वाले निम्न अग्रांग विच्छेदन की संभावना को भी रोकता है।

अगला व्याख्यान डॉ. अमित डिंडा द्वारा पुनर्योजी चिकित्सा में नैनो टेकनोलॉजी के प्रयोग के विषय पर प्रस्तुत किया गया। इन्होंने विभिन्न चिकित्सकीय एवं सर्जिकल क्षेत्रों में पुनर्योजी चिकित्सा को लागू करने के संबंध में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने में नैनोटेक्नोलॉजी प्रयोग के बढ़ते क्षेत्र का वर्णन किया। इसके उपरांत डॉ. सप्तोऋषि मंडल द्वारा प्रदाहयुक्त गठिया में एंगियोजिनिसिस और वैस्क्यूलर रिमॉडलिंग के रोल के विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। इस बाद डॉ. पवन अग्रवाल ने कृषि क्षेत्र में स्टेम सेल का प्रयोग और जारी अनुसंधान के विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। इन्होंने मानव भ्रूण के उपयोग एवं विकास से संबंधित विवादों को सावधानीपूर्वक समझाया।
इसके उपरांत द्वितीय अपराह्न सत्र की अध्यक्षता प्रा.(डॉ.) नितिन म. नागरकर, (डॉ.) एस. पी. धनेरिया और (डॉ.) महेश सिन्हा द्वारा की गई।

प्रथम व्याख्यान डॉ. प्रदीप महाजन द्वारा प्रमस्तिष्क पक्षाघात में पुनर्योजी विज्ञान के रोल के विषय पर प्रस्तुत किया गया। इन्होंने अपने कुछ मामलों के बारे में समझा कर प्रमस्तिष्क पक्षाघात के उपचार में स्टेम सेल्स के वर्तमान रोल के संबंध में श्रोता को सूचित किया।
इसके उपरांत डॉ. सारिका गुप्ता द्वारा पुनर्योजी एंडोडोंटिक्स के विषय पर व्याख्यान दिया गया। अगला व्याख्यान डॉ. वंदिता, सहायक प्राध्यापक एम्स रायपुर द्वारा नेचुरोपैथी में स्टेम सेल्स के रोल पर प्रदान किया गया। उन्होंने ग्लायोमा स्टेम सेल्स को प्रत्यक्ष रूप से लक्षित करने का प्रावधान और ग्लायोमा के संभावित स्रोत और रोग की आवृत्ति को कम करने हेतु सूक्ष्म पर्यावरण द्वारा प्रदान की जा रहे उचित अवसर के संबंध में वर्णन किया।

तंत्रिका विज्ञान के क्षेत्र में स्टेम सेल्स के प्रयोग पर सूचनाप्रद व्याख्यान के उपरांत डॉ. मुकुंद माधव ओझा, सीनियर रेजिडेंट, एम्स रायपुर (अस्थि रोग विभाग) ने वर्तमान परिदृश्य में अस्थिजैविक की आशावादी भूमिका और अस्थि रोग के क्षेत्र में भावी संभावनाओं के संबंध में संक्षेप में बताया। उन्होंने अपने व्याख्यान के माध्यम से पेशीकंकली ऊतक के त्वरित सुधार में मध्यवर्ती अस्थिजैविक के प्रयोग की अवधारणा को बताया।

इसके उपरांत डॉ. एकता खंडेलवाल, सहायक प्राध्यापक, शारीरिक चिकित्सा विभाग, एम्स रायपुर, ने लाल खून कोशिका रोग में रक्तोत्पादकनलिका कोशिका प्रतिरोपण के महत्त्व के बारे में बताया। उन्होंने चिकित्सा क्षेत्र की सीमा को विस्तारित करने के लिए अनुकूलन, इष्टतम नलिका कोशिका स्रोत, सहायताप्रद देखभाल और जीवीएचडी उपचार में नवीन सीमाओं के संबंध में बताया।

अन्य व्याख्यान डॉ. संजय वाधवा, एफएएमएस, पुनर्वास चिकित्सा विभागाध्यक्ष, एम्स, नई दिल्ली द्वारा पुनर्योजी चिकित्सा में नलिका कोशिका की भूमिका के विषय पर प्रस्तुत किए गए। इस व्याख्यान के पश्चात् डॉ. सुभाशीष राय द्वारा पश्च अभिघातज मेरु रज्जु में चोट वाले रोगियों में नलिका कोशिका के प्रयोग के विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। इन्होंने अपने परिश्रमी अनुसंधान के माध्यम से 36 महीने के मूल्यांकन में विषय–वस्तु की आयु और एएसआईए स्कोर में सुधार के बीच सामान्य पारस्परिक संबंध का पता लगाया। इन्होंने मेरु रज्जु आघात वाले रोगियों में नलिका कोशिका हार्वेस्टिंग का स्रोत और एएसआईए स्कोर में क्लिनिकल रूप से सुधार और एनसीवी में केआईएमयूआरए स्कोर के साथ इसके संबंध के महत्त्व पर भी बल दिया।
अगला व्याख्यान डॉ. सतीश मुत्थु द्वारा ओए नी में एमएससी से उत्पन्न बहिः परासरण के प्रयोग पर प्रदान किया गया। इनके व्याख्यान ने अस्थिसंधिशोथ घुटने के व्यक्तिगत एवं उचित उपचार में बहिःपरासरण की उपयोगिता हेतु ऊतक अभियंत्रिकी तकनीक के विकास के लाभों पर प्रकाश डाला। इन्होंने ओए नी के प्रबंधन में बहिःपरासरण को पूर्ण रूप से कार्यान्वित करने के विषय में प्रस्तुत कई सीमाएं और चुनौतियां भी प्रस्तुत की।
इसके उपरांत डॉ. माधव जयरामन ने अस्थिसंधिशोथ घुटने में वंशाणु उपचार के प्रयोग पर अपनी प्रस्तुति दी। इन्होंने इस तथ्य को समझाया कि वंशाणु उपचार अस्थिसंध्यार्ति उपास्थि के पुनर्योजन के प्रति एक प्रभावी विधि है। इन्होंने अस्थिसंधिशोथ घुटने के लिए हाल ही में किए गए चार क्लिनिकल एक्स वाइवो वंशाणु उपचार परीक्षण से प्राप्त परिणाम उद्धृत किए और यह भी बताया कि इन नवीन दृ

ष्टिकोणों के विकास को प्रमाणीकरण की आवश्यकता है जो कि इस क्षेत्र में जारी तीसरे चरण के क्लिनिकल परीक्षण पूरा होने के पश्चात ही संभव है।
अगला व्याख्यान डॉ. नेहा गर्ग द्वारा अस्पष्ट ऊसरता के क्षेत्र में स्वजात पीआरपी के प्रयोग के विषय पर प्रदान किया गया। इन्होंने अस्पष्ट ऊसरता के उपचार में स्वजात पीआरपी के प्रयोग द्वारा प्रदत्त आशा की नयी किरण और इसके उपयोग से प्राप्त हो रहे प्रभावी परिणाम के बारे में बताया। इस सत्र का अंतिम व्यख्यान डॉ. कार्तिक राजा द्वारा बुढ़ापा विरोधी प्रयास में निम्न कार्बोहाइड्रेट्स आहार के प्रयोग के विषय पर दिया गया।

दोपहर के भोजन और वरिष्ठ संकाय सदस्यों द्वारा कई सूचनाप्रद व्याख्यान प्रदान किए जाने के पश्चात अंतिम और सर्वाधिक प्रत्याशित आईएससीएसजी गोल्ड मेडल सत्र शुरू हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता प्रा.(डॉ.) आलोक चंद्र अग्रवाल, प्रा.(डॉ.) स. फूलझले और डॉ. कंचन मिश्रा द्वारा की गई।
आईएससीएसजी गोल्ड मेडल सत्र की शुरुआत डॉ. रंजीत चौधरी के रिकालसिट्रेंट प्लांटर फैसिटिस में पीआरपी स्वजात की भूमिका विषय व्याख्यान से की गई। इन्होंने प्रदर्शित किया कि दीर्घावधिक दर्द निवारण हेतु पीआरपी स्टिरोइड से बेहतर है हालांकि, लघु एवं मध्यवर्ती प्रभावों के बीच महत्त्वपूर्ण अंतरों को नहीं देखा गया था।
इसके उपरांत अगला व्याख्यान डॉ. शिल्प वर्मा द्वारा लेटरल एपिकॉन्डिलाइटिस हेतु कोर्टिकोस्टिरोइड इंजेक्शन और पीआरपी के प्रयोग के बीच तुलना के विषय पर प्रदान किया गया। इन्होंने अपने गहन अध्ययन के आधार पर यह निष्कृत किया कि पीआरपी विधि सांख्यिक रूप बेहतर क्रियात्मक परिणाम और बेहतर दर्द निवारण के साथ लेटरल एपिकॉन्डिलाइटिस के उपचार हेतु एक प्रभावी विधि है।

इसके बाद अगला व्याख्यान डॉ. बुद्धदेब नायक द्वारा पेरिआर्थ्राइटिस शोल्डर के प्रबंधन में सुप्रास्कैपूलर नर्व ब्लॉक और पीआरपी इंजेक्शन के बीच तुलना के विषय पर प्रदान किया गया। इन्होंने निष्कृत किया कि पीआरपी कॉन्सटेंट एवं मरले स्कोरिंग होने पर सुप्रास्कैपूलर नर्व ब्लॉक की तुलना में सांख्यिकी रूप से संशोधित परिणाम दर्शाता है। इन्होंने पीआरपी के लाभ और दुष्प्रभाव के अध्ययन हेतु बड़ी आरटीसी की आवश्यकता पर भी जोर दिया।
इसके बाद अगला व्याख्यान डॉ. वी. नागराजू द्वारा लेटरल एपिकॉन्डिलाइटिस में पीआरपी के प्रभाव पर प्रस्तुत किया गया। इन्होंने बताया कि स्वजातीय पीआरपी सेल्यूलर कीमोटैक्सिस, प्रोफिलरेशन और डिफ्रेन्टेशन के प्रोत्साहन, ऊतक अपशिष्ट, एंजीओजेनिसिस के निष्कासन और एक्सट्रासेल्यूलर मैट्रिक्स की क्रमस्थापना के माध्यम से ऊतक के सुधार में वृद्धि करने हेतु पीआरपी दृश्य वाली टेनिस एलबो के लिए उपचार की एक प्रभावी विधि साबित हुई है।
इसके उपरांत अगला व्याख्यान डॉ. अंकित सहाय द्वारा विभिन्न बीमारियों के उपचार में एचएससीटी के महत्त्व पर जोर डालते हेमेटोलॉजिकल विकारों में नलिका कोशिका प्रतिरोपण की भूमिका के विषय पर प्रस्तुत किया गया।
अंततः गोल्ड मेडल सत्र को समाप्त करने के लिए अंतिम व्याख्यान डॉ. समरजीत डे द्वारा सैकरोइलियाक ज्वाइंट डिसफंक्शन के कारण जीर्ण अधोकमर दर्द के प्रबंधन में इंट्रा–आर्टिक्यूलर पीआरपी और स्टिरोइड इंजेक्शन के बीच तुलना पर व्याख्यान प्रस्तुत हुए। यह निष्कृत किया कि समान जनसांख्यिकी वाले रोगियों में एसआईजी दर्द हेतु इंट्रा–आर्टिक्यूलर पीआरपी के एकल इंजेक्शन का प्रभाव ट्राई–एमकीनोलोन के एकल इंट्रा–आर्टिक्यूलर इंजेक्शन से अधिक पाया गया। इन्होंने इस तथ्य

पर भी जोर डाला कि पीआरपी एसआईजी दर्द वाले रोगियों में स्पष्ट रूप से दीर्घावधि दर्द निवारण और क्रियात्मक सुधार प्रदान करता है।
इस सत्र की न्यायाध्यक्षता दर्शकों में से पांच वरिष्ठ संकाय सदस्यों द्वारा की गई और डॉ. समरजीत दे को पत्र प्रस्तुति में प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। इन्होंने सैकरो इलियाक जोइंट डिसफंक्शनल पेन में पीआरपी की भूमिका के विषय पर अपना संभाषण प्रस्तुत किया। डॉ. रक्षित जे. को हिप ऑस्टिओ नेक्रोसिस वाली खूनी कोशिका बीमारी में प्लाज्मा इंटरल्यूकिंस के विषय पर पोस्टर प्रस्तुति के लिए प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।
इस सफलतापूर्वक संचालित और सूचनाप्रद सम्मेलन के अंत में प्रा. (डॉ.) आलोक चंद्र अग्रवाल ने सभी वरिष्ठ पदाधिकारियों एवं प्रतिनिधियों द्वारा इस सम्मेलन में भाग लिए जाने के लिए संबोधन एवं धन्यवाद करते हुए धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। उन्होंने आयोजक समिति की ओर से श्रव्य–दृश्य टीम और सभागृह के अन्य कर्मचारी सदस्यों को सम्मेलन के निर्विघ्न संचालन हेतु धन्यवाद दिया। अंत में उन्होंने सम्मेलन को सफल बनाने के लिए अस्थि रोग विभाग के आयोजक समिति सदस्यों को उनके सतत एवं समर्पित कठिन परिश्रम के लिए धन्यवाद दिया। आयोजक समिति के सदस्यों और कर्मचारी सदस्यों को स्मारक प्रदान कर सम्मेलन को संपन्न किया गया।

परिणाम

हालांकि यह सम्मेलन दो दिवसीय था और कोविड 19 महामारी से घिरा हुआ था लेकिन अंत में हम, आयोजक समिति आईएससीएसजीसीओएन 2021 को एम्स रायपुर, एनएएमएस, आईएससीएसजी संगठन और अन्य आयोजक संगठनों की अविस्मरणीय सहायता से सफलतापूर्वक संचालित कर पाए।
यह सम्मेलन विभिन्न चिकित्सकीय वर्ग के अभिनव विचारों से परिपूर्ण थी। इन विचारों ने सम्मेलन में भाग लेने वाली युवा पीढ़ी का ज्ञानवर्धन और प्रोत्साहन किया। हम आयोजक संगठनों से निवेदन करते है कि भविष्य में इस तरह के विचारावेश सम्मेलनों का आयोजन करते रहे जिससे चिकित्सकीय वर्ग को समाज की बेहतरी के लिए दक्षतापूर्वक कार्य करने हेतु सहायता मिलेगी।

सम्मेलन के पूर्व एवं पश्चात् परीक्षा का निष्कर्ष

आयोजक समिति ने सम्मेलन के पूर्व एवं पश्चात हुए ज्ञानवर्धन की तुलना करने के लिए इस क्विज को नियोजित किया था। प्रतिनिधियों के ई–मेल पर गूगल फॉर्म के रूप में क्विज प्रेषित कर और फिर प्रतिक्रियाओं की गणना के माध्यम से यह क्विज संचालित किया गया।

ग्राफ – 1
पूर्व क्विज परिणाम
निरीक्षण
एवरेज
मीडियन
रेंज
टोटल पोइंट्स डिस्ट्रीब्यूशन

सम्मेलन संबंधित सुझाव : आयोजक समिति ने हमारे प्रतिनिधियों से गूगल फॉर्म के माध्यम से सुझाव प्राप्त करने की योजना भी बनाई ।

सुझाव फॉर्म में सम्मेलन का प्रकार, संचालित प्रदर्शन, ज्ञानवृद्धि और इस तरह के सम्मेलनों के संबंध में भावी विचार जैसे विभिन्न प्रश्नों को शामिल किया गया था।

कुल 135 प्रतिक्रियाएँ संगृहीत की गई और ऊपर के चार्ट से यह निस्संदेह स्पष्ट है कि इस सम्मेलन से प्रत्यक्षरूप से ज्ञानवर्धन हुआ है।

6 प्रतिशत व्यक्तियों ने अनुवर्ती सम्मेलनों में ऑटोइम्यून डिसऑर्डरस और उनके उपचार को शामिल करने का सुझाव दिया है।

41 प्रतिशत व्यक्तियों के अनुसार इस तरह के विस्तृत विषय के लिए एक सम्मेलन पर्याप्त नहीं है।

लगभग 80 प्रतिशत प्रतिक्रियाकर्ता चाहते हैं की भविष्य में इस तरह के सम्मेलन आयोजित हों।

लगभग 70 प्रतिशत व्यक्तियों ने सुझाव दिया हैं कि सम्मेलन दिशानिर्देशों के अनुसार हर तरह से पूर्ण था और दक्षतापूर्वक संचालित किया गया।

डॉ. आलोक चन्द्र अग्रवाल, **FAMS**
विभागाध्यक्ष, अस्थिरोग विभाग
एम्स, रायपुर (छ.ग.)